Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research Vol-1, No-1, ***August 2022***
An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web:** http://www.knowledgeableresearch.com/

वैश्विक राजनीति में भारत

डॉ कुमुद रंजन
एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग
का. सु. साकेत पीजी कॉलेज, अयोध्या,उत्तर प्रदेश -224123
Email: **kumudrenuranjan@gmail.com**

****

ABSTRACT

किसी भी अन्य देश की तरह भारत की विदेश नीति भी अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार विभिन्न राष्ट्रों के बीच अपनी भूमिका की वृद्धि और एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की ओर अग्रसर है। भारतीय विदेश नीति 21वीं सदी में अपने उद्देश्यों की पूर्ति के दृष्टिकोण से कई चुनौतियां और अवसर को देख रही है। नए परिदृश्यों में नई सोच की आवश्यकता होती है।वर्तमान में विश्व एक असंतुलन और दिशाहीनता का शिकार है, यह ना तो द्विध्रुवीय शीत युद्ध की स्थिति में है और न ही एक बहू ध्रुवीय व्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहा है, बल्कि संपूर्ण विश्व धीरे-धीरे कई शक्ति केंद्रों में विभाजित होता जा रहा है।

भारत दो महत्वपूर्ण सुपर नेशनल निकायों गुटनिरपेक्ष आंदोलन और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ से अलग-थलग बना हुआ है जिसका वह संस्थापक सदस्य रहा था इसके अतिरिक्त भारत में क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से भी बाहर रहने का विकल्प चुना है लेकिन वही वह क्वाड देशों के समूह का सदस्य भी है यह वैश्विक शक्ति बनने की भारत की आकांक्षा के साथ सुसंगत नहीं है। अनिश्चिता और अनवरत बदलता राजनीतिक पर्यावरण स्पष्ट रूप से भारतीय नीति के लिए उल्लेखनीय चुनौतियां उत्पन्न करते हैं। यही भारत के लिए कुछ अवसर भी उपलब्ध हैं जो भारत के रणनीतिक विकल्पों एवं कूटनीतिक अवसरों के क्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं यदि हम विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में आंतरिक और बाह्य रूप से अपनी नीतियों को समायोजित कर सकें। भारत को एशिया में बहु ध्रुवीयता की स्थापना का लक्ष्य रखना चाहिए। भारत को परिवर्तित होती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाना होगा। इस अनिश्चित और अधिक अस्थिर दुनिया से संबद्ध होने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई विकल्प नहीं है ऐसा करने का एक बेहतर तरीका विषय आधारित गठबंधन की स्थापना करना है, जहां विभिन्न अभिकर्ता शामिल होंगे और उनकी संलग्नता उनकी रूचि और क्षमता पर निर्भर होगी। भारत के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के मूलभूत स्रोतों की रक्षा करने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता एक अत्यंत आवश्यक पूर्व शर्त है भारत को एक मजबूत सुरक्षित और समृद्ध देश में बदलने के लिए हम जिस बाह्य पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, हमारा आंतरिक प्रक्षेप पथ उससे अलग नहीं रखा जा सकता।

KEY WORDS: *भारतीय विदेश नीति, प्रभाव क्षेत्र का विस्तार, उभरती हुई शक्ति,21वीं सदी, वैश्विक असंतुलन, बहु-ध्रुवीय विश्व*

****

भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ-साथ यह आंतरिक एवं बाह्य दोनों दृष्टियों से पूर्णरूपेण अपनी संप्रभु शक्ति का प्रयोग करते हुए परमाणु संपन्न हो चुका है और विश्व की महाशक्तियों ने भी इसे स्वीकार कर लिया है। परंतु वैश्विक स्तर पर राजनीतिक स्थिति के आंकलन हेतु आंतरिक संप्रभुता के साथ साथ दो अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं जिनके अभाव में कोई भी राष्ट्र अपने को स्वस्थ एवं संपन्न नहीं कह सकता। यह तत्व है- विदेश नीति और राष्ट्रीय हित। विदेश नीति मानवीय

संबंधों का एक पहलू है किंतु सीमित अर्थों में दो राज्यों के आपसी संबंधों का संचालन ही विदेश नीति है। राष्ट्रीय हित, विदेश नीति का आधारभूत सिद्धांत है। राष्ट्रीय हित, विदेश नीति निर्माण में प्रारंभिक बिंदु होता है। प्रत्येक विदेश नीति का उद्देश्य राष्ट्रीय हित प्राप्त करना है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन नीतियों अथवा हितों का निर्धारण विदेश नीति के आधार पर ही करता है। विदेश नीति के निर्धारक तत्वों में जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संपदा, औद्योगिक क्षमता, सैनिक शक्ति, विचारधारा, विश्व जनमत, मुख्य है। प्रचार, आर्थिक साधन और युद्ध, विदेश नीति के उपकरण है। इसी प्रकार राष्ट्रीय हित की अभिवृद्धि के साधन के रूप में कूटनीति, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद, बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका, अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप आदि महत्वपूर्ण कारक है।

भारत की राजनीतिक स्थिति का आंकलन विश्व स्तर पर किया जा सकता है। सफल विदेश नीति वही है जो राष्ट्रीय हितों की रक्षा करें और साथ ही विश्व से निष्पक्ष, न्याय संगत स्वतंत्र होने की प्रतिष्ठा प्राप्त करें, विशेषकर भारत जैसे महत्वपूर्ण देश के लिए तो यह प्रतिष्ठा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। हाल ही में भारत की विदेश नीति के विरुद्ध यह प्रचार किया गया कि वह अमेरिका और इजरायल की ओर झुक रही है। भारत को इस प्रचार का जवाब देना चाहिए। कई कारणों से भारत में अमेरिका व इजरायल की अपेक्षा आतंकवादी हमले करना अधिक आसान है। भारत को इस धारणा के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। इसके लिए किसी गुटबंदी में पड़ने से बचना होगा। भारत की स्वतंत्र विदेश नीति में रूस, ईरान और अरब देशों की मित्रता बनाए रखने के साथ-साथ अमेरिका से भी मित्रता बनाए रखने की आवश्यकता है।

पिछली सदी में एक प्रकार से अमेरिका ने पूरी दुनिया में आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ज्ञान - विज्ञान और विचार के स्तर पर अपना दबदबा बनाए रखा और पिछले तीन दशकों में तो इसने पूरी दुनिया पर जैसे एकछत्र राज किया, किंतु आज धीरे-धीरे शक्ति संतुलन में एक नए परिवर्तन की आहट सुनाई पड़ने लगी है। पिछले कुछ वर्षों से दुनिया के कुछ अन्य देश विश्व मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे हैं। इसमें मुख्य रूप से एशिया के देश चीन और भारत। कुछ ऐसी ही बात सिंगापुर नेशनल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर किशोर मधुबनी ने अपनी पुस्तक "दी न्यू एशियन हेमिस्फीयर: दी इरेवर्सिबल शिफ्ट ऑफ ग्लोबल पावर टू दी ईस्ट" में लिखा है कि आने वाली सदी एशिया की होगी और इसमें चीन और भारत की सर्वोपरि भूमिका होगी। अपने मानव संसाधन, प्राकृतिक संपदा, शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी, सांस्कृतिक मूल्यों एवं बढ़ते हुए आर्थिक कद के कारण यह देश अत्यंत प्रभावी होंगे। परंतु उपरोक्त स्थापना की पूर्ति के लिए भारत को एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाते हुए कार्य करने की आवश्यकता है इसमें राजनीतिक नेतृत्व की भी भूमिका प्रमुख होगी।

विश्व कूटनीति में एशिया पर वर्चस्व स्थापित करने की होड़ लगी हुई है। ऐसे में भारत की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो गई है। एशिया और उस पर टिकी हुई दुनिया की निगाहों को नजदीक से देखने से एक तरफ कुछ नए ध्रुव के उभरने के संकेत मिल

रहे हैं तो दूसरी तरफ शीत युद्ध की नई तरंगे उड़ती महसूस हो रही है। जिन ध्रुवों की चर्चा इस समय हो रही है उनमें भारत, चीन, रूस, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया हैं। इन चर्चाओं के बावजूद भी वास्तव में, अमेरिका, रूस या चीन एशिया में शांति स्थापना के लिए चिंतित नहीं है। कुल मिलाकर रूस अपने खोए हुए वैभव को पुनः प्राप्त करने की लालसा रखता है और एशिया तथा अपने सीमावर्ती राज्यों से नाटो फौजों के जमावड़े को बाहर करना चाहता है वहीं चीन एशिया में अमेरिकी दखल को समाप्त करना चाहता है। इस प्रकार चीन और रूस के हित एक दूसरे के पूरक है, जिसकी झलक रूस और यूक्रेन युद्ध तथा ईरान, म्यांमार, अफगानिस्तान तथा ताइवान पर अपनाई जा रही नीतियों में दिखती भी है। दूसरी तरफ अमेरिका की चिंता एशिया में अपने वर्चस्व को बनाए रखने की है। जिसे अब प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर रूस व चीन की ओर से चुनौती मिलनी शुरू हो गई है। अमेरिका भारत को लुभाने की कोशिश कर रहा है, तो चीन इसकी काट ढूंढ रहा है।

अमेरिका को सबसे अधिक खतरा चीन की ओर से है, क्योंकि चीन जिस प्रकार से एशिया में अपनी ताकत का विस्तार कर रहा है उससे नेपोलियन के 19 वी सदी के उद्गार सही सिद्ध होते दिखाई दे रहे हैं। चीन पूर्वी एशिया में अपनी शक्ति की स्थापना के लिए बहुत आक्रामक रवैया अपनाने के मूड में है, जिसके चलते अमेरिका और उसके सबसे मजबूत सहयोगी जापान के हितों पर काफी कुछ खतरा मंडराता नजर आ रहा है। स्पष्ट है कि चीनी मंशा जापान और अमेरिकी हितों के विरुद्ध है।

भारत और चीन के बीच टकराव की स्थिति किसी भी समय आ सकती है। यद्यपि सीमा विवाद सुलझाने के प्रयास जारी हैं, परंतु यह अब तक कारगर सिद्ध नहीं हुए हैं। पिछले वर्षों में चीनी सेना ने भारतीय सीमा में कई बार अतिक्रमण करने का प्रयास भी किया, जिसका ज्वलंत उदाहरण डोकलाम विवाद और गलवान घाटी की घटना है। भारत के सीमावर्ती हिस्सों में चीनी सैनिक गतिविधियों में वृद्धि भी हुई है। चीनी थिंकटैंक की यह रणनीतिक चाल कि वह चाहे तो भारत को कई टुकड़ों में बांट सकता है, चीन से खतरे को और बढ़ाते हैं। इन घटनाओं से चीन की भारत में साम्राज्यवादी विस्तार के लक्ष्य की ओर संकेत मिलता है इस खतरे तथा एक और पड़ोसी देश से संबंध बिगड़ने से बचने के लिए कूटनीतिक और सामरिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है।

चीन की योजना 2049 तक विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति बनने की है। उसी वर्ष चीन में कम्युनिस्ट शासन के 100 वर्ष पूरे होंगे। प्रतीत होता है कि यह सामरिक गोलबंदी अमेरिका को संदेश देने के लिए की जा रही है, लेकिन भारत सहित चीन के सभी पड़ोसी देशों को इससे सतर्क रहना होगा। वैसे भी चीन के आक्रामक कदम मुख्य रूप से एशिया पर केंद्रित रहे हैं। पूर्वी एवं दक्षिणी चीन सागर से लेकर हिमालय क्षेत्र तक इसके उदाहरण हैं, जापान से लेकर फिलीपींस, भारत और भूटान तक सभी चीन की आक्रमक नीतियों का दंश पहले से झेल रहे हैं। बड़े परमाणु जखीरे के साथ चीन की अत्यंत सुरक्षित परमाणु ढाल के पीछे अपनी पारंपरिक-सैन्य तिकड़मों और हाइब्रिड युद्ध की रणनीति को और आगे बढ़ाएंगे। ऐसे परिदृश्य में ताइवान

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

पर कसते चीनी शिकंजे को रोक पाना मुश्किल हो सकता है। ताइवान के बचाव में अमेरिका की कोई भी योजना बहुत जोखिम भरी होगी। ऐसा कोई घटनाक्रम एशियाई और अंतरराष्ट्रीय राजनीति को बुनियादी रूप से बदलने की क्षमता रखता है। ऐसे में आत्मरक्षा के लिए ताइवान को और प्रयास करने होंगे। भारत ने तो पिछले कई महीनों से हिमालय क्षेत्र में जारी चीनी दुस्साहस के पूर्ण युद्ध में परिवर्तित होने की, परवाह न करते हुए चीन को करारा जवाब दिया है। चीन के साथ लगातार बढ़ रहे टकराव के दौरान भारत ने भी अपनी सामरिक रणनीति को नए आयाम दिए हैं। जिसमें कई प्रकार की मारक मिसाइलों का सफल परीक्षण किया गया है, यह दर्शाता है कि हमारी सीमा के निकट चीनी परमाणु हथियारों की उपस्थिति के बावजूद, भारत इस बिगड़ैल पड़ोसी की आक्रामकता का जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारत और अमेरिका के बीच मित्रता पूर्ण संबंध बने रहना चाहिए। किंतु यह संबंध बराबरी पर आधारित होना चाहिए। चीन की आक्रामकता को रोकना भी दोनों देशों के हित में है। भारत और अमेरिका के बीच मित्रता पूर्ण संबंध बने रहे, इसमें दोनों देशों को लाभ है। इसके बावजूद भी हम इस सच्चाई की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं कि अमेरिका विश्व में आर्थिक विषमता फैलाने तथा शोषण करने का प्रमुख केंद्र है। अपने आर्थिक और अन्य हित साधने के लिए वह विकासशील देशों का शोषण करता है। वियतनाम, इराक, लेबनान, इंडोनेशिया, क्यूबा, पनामा, कोरिया, अफगानिस्तान ऐसे कितने ही देश है जहां मूलतः अमेरिकी आक्रामकता के कारण लाखों लोग मारे गए।

भारत की कूटनीतिक पहल से अमेरिका और पाकिस्तान के बीच दूरियां बढ़ी है। पहले अमेरिका और पाकिस्तान के बीच कितनी निकटता थी स्कोर इसी बात से समझा जा सकता है कि मई 1965 में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जब अमेरिकी राष्ट्रपति जानसन के निमंत्रण पर वहां की यात्रा का कार्यक्रम बनाया था उसी समय पाकिस्तान के अयूब खान के दौरे के कार्यक्रम के कारण अमेरिका ने अपना निमंत्रण वापस ले लिया। यही नहीं जब भी कभी प्रतिबंधों की बात आई तो अमेरिका पाकिस्तान के साथ-साथ भारत को भी किसी प्रकार की अमेरिकी सहायता प्रदान करने पर रोक लगाया, अर्थात तब अमेरिका के पड़ले पर भारत और पाकिस्तान बराबर थे, लेकिन आज भारत ने पाकिस्तान के असली चेहरे को बेनकाब कर अमेरिका को उससे न सिर्फ दूर किया है बल्कि अमेरिकी संसद के माध्यम से भारत और अमेरिका के अपरिहार्य संबंधों को भी निरूपित किया है। न्यूक्लियर सप्लाई ग्रुप यानी एनएससी और एमटीसीआर (मिसाइल टेक्नोलॉजी कंट्रोल रिजीम) के मसले पर अमेरिका के समर्थन को इसी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। मानकर चलना चाहिए कि बदले में पाकिस्तान को पहले जैसा ना तो अमेरिका से करोड़ों डालर की आर्थिक मदद मिलने वाला है और ना ही कूटनीतिक समर्थन। रोचक तथ्य यह भी है कि अमेरिका के लाख दबाव के बाद भी भारत ने रूस के साथ ₹40 हजार करोड़ के S-400 एयर डिफेंस सिस्टम की खरीद की और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की जरूरत बताकर स्पष्ट कर दिया कि उसके लिए देश की सुरक्षा सर्वोपरि है, वह किसी के दबाव में आने वाला नहीं है। भारत में S-400 को लेकर काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सेंक्शन एक्ट के

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

अंतर्गत, प्रतिबंधों के प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कह चुका है कि भारत का रूस के साथ संबंधों का लंबा इतिहास रहा है जिसकी अनदेखी नहीं कर सकता। यही कारण है रूस और यूक्रेन युद्ध में भी भारत ने तथस्ता का रुख अपनाया है। स्पष्ट है कि भारत अमेरिका या रूस के दबाव में अपनी विदेश नीति को नए सिरे से परिभाषित करने वाला नहीं है।

भारत की कूटनीतिक पहल से यूएई, सऊदी अरब, मलेशिया, तुर्की, इंडोनेशिया, ईरान, नाइजीरिया,अल्जीरिया,कुवैत,कजाकिस्तान, कतर, मिश्र, बहरीन, ट्यूनीशिया, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और जाडन जैसे अन्य मुस्लिम देशों से भी भारत के संबंध मजबूत हुए हैं। भारत ने इजरायल के साथ अपने रिश्ते को पुनः परिभाषित किया है। दक्षिण एवं पश्चिम एशिया के साथ-साथ भारत और यूरोपीय संघ के बीच भी रिश्ते मजबूत हुए हैं। भारत और यूरोपीय संघ "स्टैंड अलोन" निवेश संरक्षण पर सहमति के साथ साझा हितों लोकतंत्र, स्वतंत्रता, कानून का शासन, मानवाधिकारों का सम्मान जैसे कई अन्य मानवीय विषयों पर सहमति जताते हुए, स्वीकार किया है कि यह हमारी सामरिक साझेदारी का मूल्य है। अच्छी बात यह है कि दोनों पक्षों ने भारत यूरोपीय संघ ढांचा 2025 को लेकर कार्य बिंदुओं तथा टिकाऊ विकास एवं पेरिस समझौता 2030 के एजेंडे पर आगे बढ़ने को तैयार हैं।

किसी भी अन्य देश की तरह भारत की विदेश नीति भी अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार विभिन्न राष्ट्रों के बीच अपनी भूमिका की वृद्धि और एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की ओर अग्रसर है। भारतीय विदेश नीति 21वीं सदी में अपने उद्देश्यों की पूर्ति के दृष्टिकोण से कई चुनौतियां और अवसर को देख रही है। नए परिदृश्यों में नई सोच की आवश्यकता होती है।वर्तमान में विश्व एक असंतुलन और दिशाहीनता का शिकार है, यह ना तो द्विध्रुवीय शीत युद्ध की स्थिति में है और न ही एक बहू ध्रुवीय व्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहा है, बल्कि संपूर्ण विश्व धीरे-धीरे कई शक्ति केंद्रों में विभाजित होता जा रहा है।

वर्तमान समय में विश्व बड़े उथल-पुथल भरे समय से गुजर रहा है रूस यूक्रेन युद्ध ने इस समय हलचल को बढ़ा दिया है। इससे कई पुरानी साझेदारीयां दांव पर लग गई हैं तो बहुत सारे नवीन रिश्ते उभरते दिखाई पड़ रहे हैं। वैश्विक परिवेश की जटिलता इतनी बढ़ गई है कि दो मित्र देश एक पड़ाव पर साथ दिखते हैं तो अगले पड़ाव पर उनके हित में टकराव होने लगता है। ऐसे में सभी देशों को अपनी विदेश नीति में बड़ा परिवर्तन करना पड़ रहा है। भारत के लिए परिवर्तन की है चुनौती इस कारण और विकराल हो गई कि रूस के साथ जहां ऐतिहासिक प्रगाढ़ रिश्ते हैं वही दो दशकों से अमेरिका सहित पश्चिमी देशों के साथ भारत के संबंध नई ऊंचाइयों पर पहुंचे हैं। रूस यूक्रेन के मध्य महीने भर से जारी जंग ने दोनों गुटों के बीच खाई को और बढ़ा दिया है। इसके चलते दुनिया के बहुत सारे देशों को किसी न किसी पाले में खड़ा होना पड़ रहा है। ऐसे धर्म संकट की स्थिति में भारत किसी पाले में खुलकर खड़े हुए बिना अपने हितों को पोषित करने में सफल रहा। भारत की ऐसी

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

विदेश नीति के पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों का कायल हो ना उसकी कामयाबी को ही बयान करता है। अभी कुछ दिन पूर्व ही पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने एक सार्वजनिक सभा में भारतीय विदेश नीति की भूरी भूरी प्रशंसा की थी पाकिस्तान जैसे देश से ऐसी तारीफ दुर्लभ है।

भारतीय विदेश नीति की इस सफलता में भारत के बढ़ते कद की अहम भूमिका रही। भारत उन गिने चुने देशों में रहा जिसके प्रधानमंत्री की रूस और यूक्रेन दोनों के राष्ट्रपतियों से कई बार वार्ता हुई। इस वार्ता में, प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों ही देशों से संवाद के माध्यम से समाधान निकालने की बात कही, जहां भारत रूस पर प्रतिबंध लगाकर उसे अलग-थलग करने के प्रयासों का समर्थन नहीं कर रहा, वहीं उसे रूस को यह हिदायत देने में भी परहेज नहीं हुआ कि वह अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करे। भारत के किसी संतुलित रूप का परिणाम है कि रूस के विरुद्ध स्पष्ट रुकना अपनाने को लेकर हो रही आलोचनाओं के बाद भी उसे पश्चिमी देशों के कोप का भाजन नहीं बनना पड़ा। अभी कुछ दिन पूर्व क्वॉड की बैठक हुई जिसमें यूक्रेन पर आए प्रस्ताव को लेकर भारत की कोई कटु आलोचना नहीं हुई। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के वक्तव्य से भी यही प्रतीत हुआ कि वह इस विषय में भारत की भावनाओं को समझते हैं। क्वाड के 2 सदस्य देशों जापान और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्रियों ने कुछ दिन पूर्व प्रधानमंत्री मोदी से सीधा संवाद किया। जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा अभी हाल में जब भारत आए तो इस दौरे में कई रणनीतिक साझेदारी ऊपर सहमति बनने के साथ ही जापान ने अगले 5 वर्षों के दौरान भारत में 3.2 लाख करोड़ रुपए के भारी-भरकम निवेश की प्रतिबद्धता जतायी। वर्तमान परिस्थितियों में चीन का रुख भी भारत के प्रति बदला हुआ नजर आ रहा है इसके पीछे कहीं न कहीं और रूस का कोड दिखाएं दिखता है क्योंकि आज जिस प्रकार को अलग-थलग पड़ता जा रहा है उसमें पुतिन यही चाहेंगे कि चीन और भारत जैसे 2 बड़े देश उनके साथ खड़े दिखे ऐसे में भारत एवं चीन के बीच कोई भी टकराव रूस के लिए समीकरण और खराब करेगा। वस्तुतः आकार लेती परिस्थितियों का यही निष्कर्ष निकलता है कि निवेश के एक आकर्षक ठिकाने के रूप में उभरता भारत नई वैश्विक व्यवस्था में अपनी अहम जगह बना रहा है। भारत की यह हैसियत उसकी अंतरराष्ट्रीय साख बढ़ाने एवं राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगी।

भारत दो महत्वपूर्ण सुपर नेशनल निकायों गुटनिरपेक्ष आंदोलन और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ से अलग-थलग बना हुआ है जिसका वह संस्थापक सदस्य रहा था इसके अतिरिक्त भारत में क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से भी बाहर रहने का विकल्प चुना है, यह वैश्विक शक्ति बनने की भारत की आकांक्षा के साथ सुसंगत नहीं है। अनिश्चिता और अनवरत बदलता राजनीतिक पर्यावरण स्पष्ट रूप से भारतीय नीति के लिए उल्लेखनीय चुनौतियां उत्पन्न करते हैं। यही भारत के लिए कुछ अवसर भी उपलब्ध हैं जो भारत के रणनीतिक विकल्पों एवं कूटनीतिक अवसरों के क्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं यदि हम विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में आंतरिक और बाह्य रूप से अपनी नीतियों को समायोजित कर सकें। भारत को

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

एशिया में बहु ध्रुवीयता की स्थापना का लक्ष्य रखना चाहिए। भारत को परिवर्तित होती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाना होगा। इस अनिश्चित और अधिक अस्थिर दुनिया से संबद्ध होने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई विकल्प नहीं है ऐसा करने का एक बेहतर तरीका विषय आधारित गठबंधन की स्थापना करना है, जहां विभिन्न अभिकर्ता शामिल होंगे और उनकी संलग्नता उनकी रूचि और क्षमता पर निर्भर होगी।

भारत के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के मूलभूत स्रोतों की रक्षा करने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता एक अत्यंत आवश्यक पूर्व शर्त है भारत को एक मजबूत सुरक्षित और समृद्ध देश में बदलने के लिए हम जिस बाह्य पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, हमारा आंतरिक प्रक्षेप पथ उससे अलग नहीं रखा जा सकता।

संदर्भ

1- दैनिक जागरण, लखनऊ

2-अमर उजाला, लखनऊ

3- हिंदुस्तान, लखनऊ

4- राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ

5- हस्तक्षेप, राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ

6-https://www.spmrf.org

7-https://www.drishtiias.com

8-https://www.icwa.in

9- http://hindi.bodhibooster.com

10-http://thewirehindi.com